बेंथम के सुखवाद

Part-I

बेंथम ने अपने नैतिक सिद्धान्त में मनोवैज्ञानिक सुखवाद और नैतिक सुखवाद में सामंजस्य करने की चेष्टा की है। अपनी पुस्तक 'Principal of morals and legislation' के प्रारंभ में ही उन्होंने कहा है — "Nature has placed making under the governance of two do as,, well as what we shal do, (प्रकृति ने मनुष्य जाति को दुःख और सुख इन दोनों सर्वशक्तिमान शासकों की अधीन में रख दिया है। उनको ही यह निर्देश करना है कि हमको क्या करना चाहिए। और हम क्या करेंगे। बेंथम के इस कथन से स्पष्ट है कि उन्होंने उपर्युक्त दोनों सुखवाद में सामंजस्य लाना चाहा है।

अतः बेंथम के अनुसार मनुष्य सदैव सुखों की प्राप्ति और दुःखों का निवारण

चाहता है, यही उसका नैतिक कर्तव्य भी है।

Bentham मनुष्य को स्वभावतः स्वार्थी मानता है। उसके अनुसार, "अपने लिए सुख का अधिकांश भाग प्राप्त करना प्रत्येक बौद्धिक प्राणी का लक्ष्य है। प्रत्येक मनुष्य किसी अन्य पुरुष की अपेक्षा अधिक निकट है और कोई भी मनुष्य उसके लिए उसके सुख - दुःख को नहीं तौल सकता।" सभी प्रकार के परोपकार के पीछे मनुष्य का कोई - न - कोई स्वार्थ रहता है। मनुष्य परोपकार तभी करता है जब उसमें लाभ नजर आता है। उन्हीं के ही शब्दों में, "यह स्वप्न मत देखो की अपनी कनिष्ठा (छोटी) अंगुली भी तुम्हारे लिए हिलायेंगे जब तक कि ऐसा करने में उनको अपना लाभ स्पष्ट न हो। मनुष्य ने ऐसा

कमी नहीं किया और जब तक मानव स्वभाव वर्तमान तत्वों से बना है, तब तक वे ऐसा कमी नहीं करेंगे।

"(Dream not that mean will move their little fingers to serve you, unless their advantage in so doing be obvious to them men never did so and never will till human nature is made of present materials.) Bentham के अनुसार मनुष्य की सभी प्रेरणाओं के मूल में आत्मावरण का सिद्धान्त है। सुख - दुःख के अर्थों में ही कर्तव्य, नियम और सद्गुण का महत्व है।

मानव को स्वार्थी मानते हुए बेंथम परार्थवादी हैं। उनके अनुसार, 'अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख' सर्वोच्च्य नैतिक आदर्श है। व्यक्ति का ध्येय मनुष्य - मात्र का अधिकतम सुख खोजना चाहिए

Bentham सुखों में गुणात्मक भेद नहीं मानते। सुख गुण की दृष्टि से उच्च या निम्न कोटि के नहीं कहे जा सकते। सुखों में केवल परिणाम की दृष्टि से अन्तर होता है।